ओम् कथा

(AUM KATHA)

BY

Dr. Nagendra P. Dubey

Founder President

World Association of Integrated Medicine

& AUM Foundation, LLC, NY, USA

First Edition – 2022

ओम् कथा

(AUM KATHA)

BY

Dr. Nagendra P. Dubey

Founder President

World Association of Integrated Medicine

& AUM Foundation, LLC, NY, USA

First Edition - 2022

INDEX

Sl. No.	Contents		Pages
	Hindi	English	
1.	ओम् ब्रह्म खण्ड	AUM Brahm Khand	01-02
2.	ओम् देव खण्ड	AUM Deo Khand	03-04
3.	ओम् ब्रह्माण्ड खण्ड	AUM Brahmand Khand	05-06
4.	ओम् ग्यान खण्ड	AUM Gyan Khand	07-08
5.	ओम् भौतिक खण्ड	AUM Bhautic Khand	09-10

प्रथम खण्ड

ओम् ब्रह्म खण्ड
(AUM BRAHM KHAND)

तूँ ही ओम् प्रतीक में, संपूर्ण अवतार।
Too Hi Aum Prateek Me. Sampoorn Awatar,
अणु अणु में सव व्रह्म है, पूर्ण व्रह्म संसार।।
Anu Anu Me Sab Brahm Hai,Poorn Brahm Sansar.
स्व प्रकाश में स्थिति होकर, समपूर्ण निर्धार किया,
Sw Praksh Me Sthiti Hokar, Sampoorn Nirdhar Kiya,
सम्पूर्ण निर्धारित करके, खण्ड खण्ड विस्तार किया।
Sampoorn Nirdharit karke, Khand Khand Vistar Kiya.
सभी खण्ड को स्वेच्छा से ही, अपना ही उपहार दिया,
Sabhi Khand Ko Sweksha Se Hi, Apana Hi Uphar Diya,
एक सूत्र होने के नाते, अपना ही आधार दिया।
Ek Sootr Hone Ke Nate, Apana Hi Aadhar Diya. *।।1।।*
ओम्, तत्, सत् है नाम तुम्हारा, पूर्ण व्रह्म के स्वामी,
Aum,Tat, Sat Hai Nam Tumhara, Poorn Brahm Ke Swami,
इसी नाम से आदिकाल में, व्राह्मण, वेद औ यज्ञ रचानी।
Isi Nam Aadikal Me, Brahman, Ved Au Yagy Rachani.
ओम् व्रह्म तप, यज्ञ, दान का, सवका पालन हार,
Aum Brahm Tap, Yagy, Dan Ka, Sabaka Palnhar,
कर्म समर्पित तत् व्रह्म है, सत्का सत्य संसार।
Karm Samarpit Tat Brahm Hai, Sat Ka Saty Sansar. *।।2।।*
तूँ है निराकार परमेश्वर, नहीं है कोई रूप,
Too Hai Nirakar Parmeshwar, Nahi Hai Koi Roop,
जिस रूप में जो भी माने, वही है तेरा रूप।
Jis Roop Me Jo Bhi Mane, Wahi Hi Tera Roop,
ओम् चराचर का है स्वामी, सदा धरे सव रूप,
Aum Charachar Ka Hai Swami, Sada Dhare Sab Roop,
सवके अन्तःकरण में व्यापित, तूँ ही हो सतरूप।
Sabake Antahkaran Me Vyapit, Too Hi Hai Satroop. *।।3।।*
तूँ है परम पिता परमेश्वर, परम प्रकृति के स्वामी,
Too Hai Parampita Parmeshwar, Param Prakriti Ke Swami,
तेरे अन्तःकरण ध्यान से, सर्व श्रृष्टि है आनी।
Tere Antahkarn Dhyan Se. Serv Shrishti Hai Aani
ओम् तुम्हारी वाणी ने ही, पंच तत्व निर्धार किया,
Aum Tumhari Vani Ne Hi, Punch Tatv Nirdhar Kiya,
जिसके भिन्न समन्वय ने ही, संसार विस्तार किया।
Jisake Bhinn Samanway Ne Hi, Sansar Vistar Kiya. *।।4।।*

परमात्मा ने श्रृष्टि सृजन में, ओम् शब्द उच्चार किया,
Parmatma Ne Shrishti Srijan Me , Aum Shabd Uchchar Kiya,
ओम् शब्द ने परमरूप में, पंच तत्व निर्धार किया।
Aum Shabd Ne Paramroop Me, Punch Tatv Nirdhar Kiya.
पंच तत्व में क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर समाहित,
Punch Tatv Me Kshiti, Jal, Pawak, Gagan, Sameer Samahit,
जिसके अपने दैव गुणों से, जन धन है विस्तारित।
Jisake Apane Daiw Guno Se, Jan Dhan Hai Vistarit. *।।5।।*
क्षिति शरीर है जल वाहक है, अग्नि तत्व है साधक,
Kshiti Shareer Hai Jal Vahak Hai, Agni Tatv Hai Sadhak,
वायु वेग है शक्ति रूप में, प्राण वायु संचालक।
Vayu Veg Hai Shakti Roop Me, Pran Vayu Sanchalak.
जब तक इनका रहे समन्वय, सदा रहे सुख दायक,
Jab Tak Inaka Rahe Samnway, Sada Rahe Sukh Dayak.
नागेन्द्र इनका अनियंत्रण, सदा होय दुख दायक।
Nagendr Inaka Aniyantran, Sada Hoy Dukh Dayak. *।।6।।*
जय जय कृपा निधान, संपूर्ण आधार।
Jay Jay Kripa Nidhan, Sampoorn Adhar,
कण कण के संसार तुम, करते सवको पार।।
Kan Kan Ke Sansar Tum, Karte Sabako Par.

द्वितीय खण्ड

ओम् देव खण्ड
(AUM DEO KHAND)

ब्रह्म खण्ड से अवतरित, देव खण्ड मे वास।
Brahm Khand Se Awatarit, Deo Khand Me Was
देव खण्ड में सर्वहित, करत रहत अभ्यास।।
Deo Khand Me Servhit, Karat Rahat Abhyas.
स्वर्ग लोक को सर्वोपरि करके, देव लोक विस्तार किया,
Swarg Lok Ko Servopari Karke, Deo Lok Vistar Kiya,
सभी देवताओं को तू ने, उचित उचित आधार दिया।
Sabhi Deotaon Ko Too Ne, Uchit Uchit Aadhar Diya.
उनके संग उनके साथी को, प्रेम सहित निर्धार किया,
Unake Sangh Unke Sathi Ko, Prem Sahit Nirdhar Kiya.
जिसकी रही भावना जैसी, वैसा ही संसार दिया।
Jisaki Rahi Bhawana Jaisi, Waisa Hi Sansar Diya. ।।1।।
तूँ ने अपनी श्रृष्टि सृजन में, तीन रूप दर्शाये,
Too Ne Apani Shrishti Srijan Me, Teen Roop Darshaye,
ब्रह्म रूप में ब्रह्मा बन कर, सकल श्रृष्टि निर्माये।
Brahm Roop Me Brahma Van Kar, Sakal Shrishti Nirmaye.
विष्णु रूप में पालक बन कर, सकल श्रृष्टि विस्तार किये,
Vishnu Roop Me Palak Van Kar, Sakal Shrishti Vistar Kiye,
रूद्र रूप में साधक वन कर, अप्रिय का संहार किये।
Rudra Roop Me Sadhak Van Kar, Apriy Ka Sanhar Kiye. ।।2।।
माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, सव हैं तेरे जाये,
Maa Sarswati, Lakshmi, Durga, Sab Hai Tere Jaye.
सरस्वती वन ज्ञान दान दे, सव सम्मान वढ़ाये।
Sarswati Van Gyan Dan De, Sab Samman Badhaye.
लक्ष्मी रूप में मान वढा कर, लक्ष्य सिद्ध करवाये,
Lakshmi Roop Me Maan Badha Kar, Lakshy Siddh Karwaye.
दुर्ग रूप में माता वन कर, सव कल्याण कराये।
Durg Roop Me Durga Van Kar, Sab Kalyan Karaye. ।।3।।
इन्द्र, वृहस्पति, गरूड रूप में, सकल सृष्टि कल्याण करे,
Indr, Brihaspati, Garud Roop Me, Sakal Shrishti Kalyan Kare,
इन्द्र रूप में वारि सृजन कर, सृष्टि में जलधार भरें।
Indr Roop Vari Srijan Kar, Shrishti Me Jaldhaar Bhare.
ज्ञान वृहस्पति पूर्ण करे, सव मानव का सम्मान करे,
Gyan Brihaspti Poorn Kare, Sab Manav Ka Samman Kare,
गरूड रूप में संहारक हो, सर्व विषम संहार करे।
Garud Roop Me Sanharak Ho, Serv Visham Sanhar Kare. ।।4।।

तेरे तेज पुंज से सिंचित, इन्द्री मन औ बुद्धि,
Tere Tej Punj Se Sinchit, Indri, Mun Au Buddhi,
सब पर तेरी दृष्टि निरन्तर, करे कार्य औ सिद्धि।
Sab Per Teri Drishti Nirantar, Kare Kary Au Siddhi.
कर्ण कर्म औ दृष्टि से स्वामी, सदा उच्च व्यवहार,
Karn Karm Au Drishti Se Swami, Sada Uchch Vyawhar,
अच्छा सुने, करें औ देखें, ताकि वेडा पार।
Achchha Sune, Kare Au Dekhe, Taki Beda Par. *।।5।।*
अन्त समय में तूँ ही आत्मन, इन्द्री मन स्वीकार करे,
Ant Samay Me Too Hi Atman, Indri, Mun Swikar Kare,
आत्मा को तदरुप वनाकर, पुनर्जन्म संचार करे।
Aatma Ko Tadroop Vanakar, Punarjanam Sanchar Kare.
सर्व जगत में दैहिक, दैविक, भौतिक ताप संचार करे,
Serv Jagat Me Daihik, Daivik, Bhautik Tap Sanchar Kare,
कह नागेन्द्र तू ज्ञान वढाकर, सभी ताप उपचार करे।
Kah Nagendr Too Gyan Badhakar, Sabhi Tap Upchar Kare. *।।6।।*

देव लोक विस्तार कर, दिये सभी को मान।
Deo Lok Vistar Kar, Diye Sabhi Ko Man.
जिसकी जैसी कल्पना, वैसे उसका काम।।
Jisaki Jaisi Kalpana, Waise Usaka Kam.

तृतीय खण्ड

ओम् ब्रह्माण्ड खण्ड
(AUM BRAHMAND KHAND)

देवलोक से उतरिकर, ब्रह्माण्ड निर्माय।
Deo Lok Se Utarikar, Brahmand Nirmay.
सर्व समन्वय करन हेतु, दिये पिण्ड जन्माय।।
Serv Samanway Karan Hetu, Diye Pind Janmay.
त्रैलोक को क्रम में वाँधा, स्वर्ग लोक को उपर राखा,
Trailok Ko Kram Me Bandha, Swarg Lok Ko Upar Rakha,
राशि, तारे, ब्रह्माण्ड में राखा, नक्षगों से सवको साधा।
Rashi, Tare Brahmand Me Rakha, Nakshatron Se Sabako Sadha.
सभी चराचर निचे राखा, सवका समन्वय प्रेम से साधा,
Sabhi Charachar Niche Rakha, Sabaka Samnway Prem Se Sadha.
मृत पाताल लोक को वाँधा, उनको तूँ ने सीधे साधा।
Mrit Patal Lok Ko Bandha, Unako Too Ne Sidhe Sadha. *।।1।।*
राशि चक्र को सूत्र बाँधकर, अलग, अलग विस्तार किया,
Rashi Chakr Ko Sootr Bandhkar, Alag Alag Vistar Kiya.
सूर्य, चन्द्र औ अन्य ग्रहों की, सीमा को निर्धार किया।
Sury Chandr Au Any Grahon Ki, Seema Ko Nirdhaar Kiya.
राशि राशि का करके समन्वय, चक्रों को निर्धार किया,
Rashi Rashi Ka Karake Samanway, Chakro Ko Nirdhaar Kiya.
सभी राशि के ताल मेल से, अण्ट अंश का व्दार दिया।
Sabhi Rashi Ke Tal Mel Se, Asht Ansh Ka Dwar Diya. *।।2।।*
सभी मनुष्यों की सेवा में, व्दादस राशि वनाये,
Sabhi Manushyon Ki Sewa Me, Dwadash Rashi Vanaye.
हर व्यक्ति की राशि नियत कर, ग्रह नक्षत्र वैठाये।
Har Vyakti Ki Rashi Niyat Kar, Grah Nakshatr Baithaye.
राशिनुसार स्वभाव नियत कर, मानव रूप दिखाये,
Rashinusar Swabhav Niyat Kar, Manav Roop Dikhaye.
जिसकी जैसी राशि नियत हो, जीवन वैसा पाये।
Jisaki Jaisi Rashi Niyat Ho, eevan Waisa Paye. *।।3।।*
आपस में सव मिलकर तारे, तारे पुंज वनाये,
Aapas Me Sab Milkar Tare, Tare Punj Banaye.
स्व उष्मा व स्व प्रकाश दे, अन्य पिंण्ड दमकाये।
Sw Ushma W Sw Prakash De, Any Pind Damkaye.
दूरस्थ ब्रह्माण्ड में स्थिति, अपनी ज्योति दिखाये,
Doorasth Brahmand Me Sthiti, Apani Jyoti Dikhaye.
जिसकी जैसी ज्ञान दृष्टि हो, वैसे दर्शन पाये।
Jisaki Jaisi Gyan Drishti Ho, Waise Darshan Paye. *।।4।।*

शत सहत्र तारे व्रह्माण्ड के, अगणित गण दर्शायें,
Shat Sahashtr Tare Brahmand Ke, Aganit Gan Darshye,
अपने तेज पुंज से तारे, ग्रह राशि चमकायें,
Apane Tej Punj Se Tare, Grah Rashi Chamakaye.
सप्तरिषि महान तारा है, अपना दर्श कराये।
Sapt Rishi Mahan Tara Hai, Apana Darsh Karaye,
तेरी कृपा दृष्टि से स्वामी, और भी तारे दर्शाये।
Teri Kripa Drishti Se Swami, Aur Bhi Tare Darshaye. *।।5।।*
तेरी कृपा मात्र से स्वामी, सभी नव ग्रह जाये,
Teri Kripa Matr Se Swami, Sabhi Nav Grah Jaye,
सूर्य देव का वन्दन कर ही, उसका चक्र लगाये।
Sury Deo Ka Vandan Kar Hi, Usaka Chakr Lagaye.
तेज उष्म से हीन नव ग्रह, सूर्य से उर्जा पायें,
Tej Ushm Se Heen Naw Grah, Sury Se Urja Paye,
कह नागेन्द्र सौर्य ऊर्जा से, नव ग्रह रूप दिखायें।
Kah Nagendr Saury Urja Se, Nav Grah Roop Dikhaye. *।।6।।*

ग्रह, नक्षत्र, व्रह्माण्ड के तारे, तेरे ही सव जाये।
Grah Nakshatr Brahmand Ke Tare, Tere Hi Sab Jaye,
इनका आपस का ही समन्वय, जीवन पथ दर्शाये।।
Inaka Aapas Ka Hi Samanway, Jeewan Path Darshaye.

चतुर्थ खण्ड

ओम् ग्यान खण्ड
(AUM GYAN KHAND)

ग्यान लोक में आगमन, वने ज्ञान के धाम।
Gyan Lok Me Aagaman, Bane Gyan Ke Dham.
जिसकी जैसी भावना, वैसे उसका काम।।
Jisaki Jaisi Bhawna, Waise Usaka Kam.
अथर, यजुर, रिग, साम वेद से, सवका ज्ञान वढावन,
Athar, Yajur, Rig, Sam Ved Se, Ssbaka Gyan Badhawan,
अथर वेद से मान वढाकर, मानसिक कष्ट नसावन।
Athar Ved Se Maan Badhakar, Mansik Kasht Nasawan.
यजुर वेद से यज्ञ करै, हो सवका जीवन पावन,
Yajur Ved Se Yagy, Ho Sabaka Jeevan Pawan,
रिग वेद से मंत्र जपाकर, साम करे कवि गायन।
Rig Ved Se Mantr Japakar, Sam Kare Kavi Gayan. *।।1।।*
व्रह्म एक है रूप अनेको, सवको वोध कराये,
Brahm Ek Hai Roop Aneko, Sabako Bodh Karaye,
ओम् एक है इसी जगत में, अलग अलग कहलाये।
Aum Ek Hai Isi Jagat Me, Alag Alag Kahlaye.
ओम् हिन्दू है, हूम तिब्बतियन, अमिन मुस्लि कहलाये,
AUM Hindu Hai, HOOM Tibbetian, AMIN Musli Kahalaye,
अमेन ग्रीक, रोमन, किश्चिपन, अहूम जोराष्ट्र वताये।
AMEN Greek, Roman, Christian, AHUM Zorastr Bataye. *।।2।।*
तीन गुन के दाता हो तुम, सवमें व्यापक रहते हो,
Teen Gun Ke Data Ho Tum, Sabame Vyapak Rahate Ho,
सत गुण से तू सत्य करे, औ रजस राज सिखलाते हो।
Sat Gun Se Too Saty Kare, Au Rajas Raj Sikhalate Ho.
तमस गुण अज्ञान वढाकर, नाना दुर्गति करते हो,
Tamas Gun Agyan Badhakar, Nana Durgati Karate Ho,
तू मानव को समय समय पर, सव गुण वोध कराते हो।
Too Manav Ko Samay Samay Par, Sab Gun Bodh Karate Ho. *।।3।।*
वैश्वानर से वैभव देकर, सर्व मान्य विस्तार करे,
Vaishwanar Se Vaibhaw Dekar, Serv Maany Vistar Kare,
तैजस से तूँ तेज बढाकर, कुल का ज्ञान प्रगाढ करे।
Taijas Se Too Tej Badhakar, Kul Ka Gyan Pragadh Kare.
प्रज्ञान से लक्ष्य नियत कर, व्रह्म ज्ञान पर ध्यान करे,
Pragyan Se Lakshy Niyat Kar, Brahm Gyan Par Dhyan Kare,
आत्मन्, व्रह्ममन् लीन कराकर, परम गती प्रदान करे।
Atman, Brahman Leen Karakar, Param Gatee Pradan Kare. *।।4।।*

वैश्वानर जाग्रत स्थिति है, वाह्यम्वर में लीन करे,
Vaishwanar Jagrat Sthiti Hai, Vahyambar Me Leen Kare,
तैजस स्वप्न अवस्था है, जो अर्न्तध्यान विलिन करे।
Taijas Swapan Awastha Hai, Jo Antardhyan Vilin Kare.
प्रज्ञान सुसुप्ती वन कर, निज आत्मन का ध्यान करे,
Pragyan Susupti Van Kar, Nij Atman Ka Dhyan Kare,
आत्मन् तुरिया स्थिति में तूँ, सदा चित्त आनन्द करे।
Atman Turiya Sthiti Me Too, Sada Chitt Anand Kare. *।।5।।*
क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर हैं, जड़ प्रकृति के दाता,
Kshiti, Jal, Pawak, Gagan, Sameer Hai, Jad Prakriti Ke Data,
मन वुद्धि औ अहंकार सव, इनके संध वधाता।
Mun, Buddhi Au Ahankar Sab, Inake Sangh Vadhata.
स्व स्वरूप में चेतन वनकर, उच्च प्रकृति दर्शाता,
Sw Swaroop Me Chetan Vankar, Uchch Prakriti Darshata,
आत्म रूप में आत्मा वन कर, जड़ प्रकृति को चलाता।
Atm Roop Me Atma Vankar Kar, Jad Prakriti Ko Chalata. *।।6।।*
आत्म रूप में आत्मा वन कर, जीवन का संचार करे,
Atm Roop Me Atma Van Kar, Jeevan Ka Sanchar Kare,
सर्व जगत को जीवन देकर, सृष्टि का विस्तार करे।
Serv Jagat Ko Jeevan Dekar, Shrishti Ka Vistar Kare.
जीव रूप में तूँ ही नागेन्दर, सेवा भाव प्रचार करे,
Jeev Roop Me Too Hi Nagender, Sewa Bhaw Prachar Kare,
मानव माधव सेवा प्रेरित, मानवता स्वीकार करे।
Manav Madhav Sewa Prerit, Manavata Swikar Kare. *।।7।।*

तू ही ओम् प्रतीक में, मान ग्यान भण्डार।
Too Hi AUM Prateek Me, Maan Gyan Bhandar.
मानव ग्यान विस्तार कर, आत्म करै स्वीकार।।
Manav Gyan Vistar, Atm Kare Swikar.

पंचम खण्ड

ओम् भौतिक खण्ड
(AUM BHAUTIK KHAND)

ओमाकृत में रचित है, सभी चराचर जात।
Aumakrit Me Rachit Hai, Sabhi Charachar Jat.
पंचतत्व से जनित है, सव भौतिक की गात।।
Punchtatw Se Janit Hai, Sab Bhautik Ki Gat.

जन्म आयु के दाता हो तुम, कण कण में रहते हो,
Janm Aayu Ke Data Ho Tum, Kan Kan Me Rahato Ho,
सवमे जीवन शक्ति दान कर, सवको गति देते हो।
Sabame Jeevan Shakti Dan Kar, Sabako Gati Deto Ho.
चर औ अचर रूप मे तूँ ही, सकल भुवन भ्रमते हो,
Char Au Achar Roop Me Too Hi, Sakal Bhuwan Bhramate Ho,
मानव की मानवता वन कर, जन जन प्रेरित करते हो।
Manav Ki Manavata Van Kar, Jan Jan Prerit Karate Ho. ।।1।।

पूरक वन व्रह्माण्ड से तुम ही, प्राण वायु भरते हो,
Poorak Van Brahmand Se Tum Hi, Pran Vayu Bharate Ho,
जिसकी जीवन शक्ति जैसी, उतनी स्वासें देते हो।
Jisaki Jeevan Shakti Jaisi, Utani Swase Dete Ho.
रेचक से सव कष्ट हरण कर, जीवन शक्ति वधाते हो,
Rechak Se Sab Kasht Haran Kar, Jeevan Shakti Badhate Ho.
कर्म, भाग्य, संस्कार से निर्मित, जीवन दीप जलाते हो।
Karm, Bhagy, Sanskar Se Nirmit, Jeevan Deep Jalate Ho. ।।2।।

चर औ अचर सभी खण्ड के, तेरे ही हैं जाये,
Char Au Achar Sabhi Khand Ke, Tere Hi Hai Jaye,
अपने अंश से उन्हे वाँधकर, खण्ड खण्ड उपजाये।
Apane Ansh Se Unhe Badnkar, Khand Khand Upajaye.
पंच तत्व के दाता हो तुम, सर्व जगत के ताता,
Punch Tatw Ke Data Ho Tum, Serv Jagat Ke Tata,
उसी तत्व के तत्वान्तर से ही, सभी जीव निर्माता।
Usi Tatw Ke Tatwantar Se Hi, Sabhi Jeew Nirmata. ।।3।।

पंच तत्व की निर्मित काया, सर्व लोक में तुम्ही वनाया,
Punch Tatw Ki Nirmit Kaya, Serv Lok Me Tumhi Vanaya,
दोष, धातु सव तुम्ही वनाये, यथा योग्य उन्हें वैठाये।
Dosh, Dhatu Sab Tumhi Vanaye, Yatha Yogy Unhe Baithaye.
सवका समन्वय तुमने वनाया, जीवन पथ सवको दर्शाया,
Sabaka Samnway Tumane Vanaya, Jeevan Path Sabako Darshaya,
दोष धातु का करके समन्वय, पूर्ण स्वास्थ्य की राह वताया।
Dosh Dhatu Ka Karke Samanway, Poorn Swasthya Ki Rah Vataya. ।।4।।

सभी चराचर परम कृपा से, निज प्रकृति में जाये,
Sabhi Charachar Param Kripa Se, Nij Prakriti Me Jaye,
जिसका जैसा पूर्व कर्म है, वैसा जीवन पाये।
Jisaka Jaisa Poorv Karm Hai, Waisa Jiwan Paye.
पूर्व जन्म के धर्म कर्म से, वर्तमान जीवन पाये,
Poorv Janm Ke Dharm Karm Se, Vartman Jeevan Paye,
ओमिक शुद्धि होय जव इनकी, तभी इन्हें अपनाये।
Aumic Shuddhi Hoy Jab Inaki, Tabhi Inhe Apanaye. //5//
प्राण, ज्ञान, मन जीवन तूँ है, विश्व रूप में स्वामी,
Pran, Gyan, Mun Jiwan Too Hai, Vishwroop Me Swami,
जीवन का संचार तुम्ही हो, सकल मनोरथ कामी।
Jeevan Ka Sanchar Tumhi Ho, Sakal Manorath Kami.
आत्मा के संग इन्द्री मन को, अग्र जन्म ले जाते हो,
Atma Ke Sang Indri, Mun Ko, Agr Janm Le Jate Ho,
कर्म नियति के ताल मेल से, नियत कर्म करवाते हो।
Karm Niyati Ke Tal Mel Se, Niyat Karm Karwate Ho. *//6//*
जन्म जन्म तूँ साथ ओम् है, पूर्ण ब्रह्म के दाता,
Janm Janm Too Sath Aum Hai, Poorn Brahm Ke Data,
मानव डूवा अज्ञान में, समझ नहीं कुछ आता।
Manav Dooba Agyan Me, Samajh Nahi Kuchh Aata.
अज्ञान अन्धकार रूप से, इन्द्री, मन, वुद्धि वाँधे,
Agyan Andhkar Roop Se, Indri, Mun Buddhi Badhe.
अज्ञान का नाश करे तूँ, तभी तुम्हें पहचाने।
Agyan Ka Nash Kare Too, Tabhi Tumhe Pahchane. *//7//*
ओमिक ध्यान धरे जव कोई, तेरे शरण में आवै,
Aumic Dhyan Dhare Jab Koi, Tere Sharan Me Awe,
माया मोह हटावै तूँ हीं, तभी उसे अपनावै।
Maya Moh Hatawe Too Hi, Tabhi Use Apanawe.
धन, ग्यान औ सुख प्रदान कर, उसके ताप हटावै,
Dhan, Gyan Au Sukh Pradan Kar, Usake Tap Hatawe,
जीवन का उद्धार करे औ, सदा सदा अपनावै।
Jeevan Ka Uddhar Kare Au, Sada Sada Apanawe. *//8//*
जो मन वचन कर्म से स्वामी, तेरे शरण में आवै,
Jo Mun Bachan Karm Se Swami, Tere Sharan Me Awe,
सुख, समृद्धि, आयु, बल, पावै, परम रूप हो जावै।
Sukh, Samridhi Ayu Bal Pawe, Param Roop Ho Jawe.
ओम् कथा की भाव धारणा, जो कोई मन से ध्यावै।
Aum Katha Ki Bhaw Dhaarna, Jab Koi Mun Se Dhawe,
नागेन्द्र तव कृपा से ब्रह्मन, तभी उसे अपनावै।
Nagendr Taw Kripa Se Brahman, Tabhi Use Apanawe. *//9//*

तेरी ओमिक प्रीत से, सदा होय कल्यान।
Teri Aumic Preet Se, Sada Hoy Kalyan.
इन्दी, मन, वुद्धि सभी, रहे शरण में आन।।
Indri, Mun, Buddhi Sabhi, Rahe Sharan Me Aan.